

विषय-सूची

- निदेशक की कलम से 01
- 19वाँ दीक्षांत समारोह 02
- अनुसंधान उपलब्धियाँ 03
- विकसित तकनीक 03
- प्रौद्योगिकी की लाइसेंस 03
- स्वीकृत पैटेंट 03
- क्षमता निर्माण 04
- संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशालाएँ 06
- 77वाँ गणतंत्र दिवस 07
- मत्स्य क्लिनिक 08
- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 08
- सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन 09
- उत्कृष्टता की पहचान 09
- आमंत्रित व्याख्यान 10
- प्रशासन 10
- प्रश्नोत्तरी 10

निदेशक की कलम से

मुझे यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि मैं 'मत्स्य दर्पण' का जनवरी-मार्च 2026 अंक प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस अंक में भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई द्वारा की गई प्रमुख उपलब्धियों, नवाचारों और जन-



संपर्क पहलों को दर्शाया गया है। इस अंक में जिन गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है, वे मत्स्य शिक्षा, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, उद्यमिता को बढ़ावा देने और हितधारकों को सशक्त बनाने के क्षेत्र में उत्कृष्टता के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। यह तिमाही कई महत्वपूर्ण उपलब्धियों से भरी रही। भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के 19वें दीक्षांत समारोह में 143 स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट स्नातकों की शैक्षणिक उपलब्धियों का समारोह मनाया गया, जिससे मत्स्य उच्च शिक्षा और मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में हमारी भूमिका और भी मजबूत हुई है। हमारी अनुसंधान टीमों ने 'पीकोक ईल' के लिए कैप्टिव बीज उत्पादन तकनीक विकसित कर और 'ऑलिव बार्ब' के ब्रूडस्टॉक विकास के लिए पोषण संबंधी प्रोटोकॉल तैयार कर, जलीय कृषि के विविधीकरण और संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। स्वदेशी और विदेशी कैटफिश प्रजातियों की त्वरित पहचान के लिए एक मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक तकनीक का लाइसेंस जारी करना, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण और सामाजिक प्रभाव की दिशा में हमारे प्रयासों का एक और बेहतरीन उदाहरण है। स्मार्ट जलीय कृषि पोषण, अगली पीढ़ी के डायग्नोस्टिक्स, जीनोमिक्स और कम्प्यूटेशनल उपकरणों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से क्षमता निर्माण हमारी प्राथमिकता बनी रही। इन पहलों ने पूरे देश के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और पेशेवरों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाया। संस्थान ने 'सजावटी मछली मेला और एंकेरियम विज्ञान

कार्यशाला', 'मत्स्य क्षेत्र में उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र (E3F)', 'मत्स्य सहकारी समितियों के लिए जलीय-व्यापार के अवसर' और 'किसान और मछुआरा मेला' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों, उद्यमियों, उद्योग के हितधारकों और मछुआरा समुदायों के साथ अपने जुड़ाव को भी मजबूत किया। इस अवधि के दौरान एक ऐतिहासिक उपलब्धि "हीलिंग फिन्स" की आधारशिला रखना था - जो महाराष्ट्र का पहला मल्टीस्पेशलिटी फिश क्लिनिक और मोबाइल फिश केयर यूनिट है; यह जलीय पशुओं की स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं को काफी मजबूत करेगा। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. नवाचार, स्थिरता और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, और साथ ही 'विकसित भारत 2047' के विज़न में भी अपना योगदान दे रहा है। मैं हमारे वैज्ञानिकों, संकाय, छात्रों, कर्मचारियों, पूर्व छात्रों, उद्योग भागीदारों और हितधारकों के प्रयासों की तह दिल से सराहना करता हूँ, जिनके सामूहिक योगदान से संस्थान की राष्ट्रीय और वैश्विक प्रतिष्ठा लगातार बढ़ रही है।



(एन. पी. साह)

शैक्षणिक

मात्स्यिकी पेशेवरों की अगली पीढ़ी को सशक्त बनाना: भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. का 19वाँ दीक्षांत समारोह

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने 21 फरवरी 2026 को अपना 19वाँ दीक्षांत समारोह मनाया, जो मात्स्यिकी उच्च शिक्षा और मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस समारोह के दौरान, भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक और कुलपति डॉ. एन. पी. साहू ने 94 स्नातकोत्तर और 49 पीएचडी स्नातकों को डिग्रियां प्रदान कीं। मुख्य अतिथि, डेयर के सचिव और भा.कृ.अनु.प. के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट ने मेधावी छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान कर दीक्षांत भाषण दिया। डॉ. जॉयकृष्ण जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) और शिक्षा विभाग के प्रभारी, भा.कृ.अनु.प., ने इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहें। अपने संबोधन में, डॉ. जाट ने भारत के तेज़ी से बढ़ते मत्स्य क्षेत्र को मज़बूत करने में पेशेवर मात्स्यिकी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला; यह क्षेत्र लगभग 30 मिलियन लोगों की आजीविका का आधार है। उन्होंने उन्नत जलीय कृषि तकनीकों के बढ़ते महत्व पर ज़ोर दिया, जिनमें संसाधन-कुशल उत्पादन प्रणालियाँ, आनुवंशिक रूप से बेहतर किस्में, नवीन आहारों और स्वास्थ्य प्रबंधन पद्धतियाँ शामिल हैं। उन्होंने कहा कि ये विकास मत्स्य पेशेवरों के लिए उद्यमी और प्रौद्योगिकी-संचालित नेता के रूप में उभरने के अपार अवसर प्रदान करते हैं। नवाचार, स्टार्ट-अप और उद्यमिता को बढ़ावा देने में के.मा.शि.सं. के प्रयासों की सराहना करते हुए, उन्होंने टिप्पणी की कि ऐसी पहल ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के निर्माण और 'विकसित भारत 2047' के दृष्टिकोण को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। उन्होंने स्नातक होने वाले छात्रों, विशेष रूप से पदक विजेताओं को बधाई दी, और के.मा.शि.सं. को मत्स्य शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्टता की अपनी खोज जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।



अनुसंधान

पौष्टिकता से प्रजनन तक: ऑलिव बार्ब का कैटिव ब्रूडस्टॉक विकास

पुंटिस (हैमिल्टन, 1822), जिसे आमतौर पर सरपुती या ऑलिव बार्ब के नाम से जाना जाता है, अपने भोजन और सजावटी गुण के लिए बहुत अधिक महत्व रखती है। यह भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में, विशेष रूप से असम और अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों, पश्चिम बंगाल, बिहार और ओडिशा में, एक लोकप्रिय खाद्य मछली है। पोषण की दृष्टि से, *P. sarana* उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का एक बेहतरीन स्रोत है; इसमें लगभग 20-21% प्रोटीन और 3% लिपिड होता है, साथ ही कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा और पोटेशियम जैसे आवश्यक खनिज भी पाए जाते हैं। विश्वसनीय और टिकाऊ गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन को सुनिश्चित करने के लिए, कैटिव ब्रूडस्टॉक का विकास एक अत्यंत महत्वपूर्ण शर्त है। इस आवश्यकता को पहचानते हुए, भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. ने राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के वित्तीय सहयोग से, *P. sarana* ब्रूडस्टॉक के सफल कैटिव परिपक्वण के लिए एक पोषण रणनीति विकसित की है। व्यवस्थित आहार संबंधी उपायों के माध्यम से, ब्रूडस्टॉक के परिपक्वण के लिए इष्टतम आहार प्रोटीन और लिपिड की आवश्यकताओं को क्रमशः 25% और 6% पर मानकीकृत किया गया। विकसित प्रोटोकॉल कैटिव परिस्थितियों में जननांगों के बेहतर विकास, ब्रूडस्टॉक के स्वास्थ्य और प्रजनन प्रदर्शन को सुगम बनाता है, जिससे इस व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण स्वदेशी मछली प्रजाति के लिए एक टिकाऊ बीज उत्पादन प्रणाली की स्थापना में योगदान मिलता है। इस उपलब्धि से प्रजातियों के संरक्षण में सहायता मिलने, जंगली बीज संग्रह पर निर्भरता कम होने और इस क्षेत्र में जलीय कृषि-आधारित आजीविका के अवसरों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।



तकनीक विकसित

पीकाँक ईल प्रजनन और बीज उत्पादन के माध्यम से जलीय कृषि विविधीकरण को बढ़ावा

मैक्रोग्रेथस अराल (पीकाँक ईल) मछली एक व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजाति है, जिसे असम, बिहार, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में भोजन और सजावटी मछली, दोनों ही रूपों में महत्व दिया जाता है। बाज़ार में इसकी अत्यधिक मांग और जंगली स्रोतों पर निर्भरता के कारण, इस प्रजाति के लिए टिकाऊ बीज उत्पादन तकनीकों को विकसित करने की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है। के.मा.शि.सं. की अनुसंधान टीम ने पीकाँक ईल के लिए 'कैप्टिव सीड प्रोडक्शन पैकेज' (नियंत्रित वातावरण में बीज उत्पादन पैकेज) सफलतापूर्वक विकसित किया है, जो इस स्थानीय प्रजाति के संरक्षण और जलकृषि (एकाकल्चर) के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस तकनीक में उत्पादन के सभी महत्वपूर्ण चरण शामिल हैं, जैसे कि नियंत्रित वातावरण में 'बूडस्टॉक' (प्रजनन योग्य मछलियों) का विकास, कृत्रिम प्रजनन के प्रोटोकॉल, लार्वा का पालन-पोषण और नियंत्रित हैचरी स्थितियों के तहत बीज का उत्पादन। प्रजनन और लार्वा पालन की तकनीकों के सफल मानकीकरण से पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत में इस प्रजाति के संरक्षण, आजीविका में सुधार और मीठे पानी की जलकृषि के विविधीकरण को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। यह उपलब्धि पीकाँक ईल के टिकाऊ उपयोग और व्यावसायीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो देश में जैव विविधता के संरक्षण और सजावटी मछली पालन क्षेत्र के विकास, दोनों में योगदान देता है।



प्रौद्योगिकी का व्यावसायीकरण

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. द्वारा कैटफ़िश की प्रामाणिकता जाँच के लिए अभिनव आणविक उपकरण को लाइसेंस प्रदान किया गया।

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई ने एक ऐसी तकनीकी लाइसेंस प्रदान किया है जो एक ही पीसीआर रिएक्शन में क्लैरियस मागुर (देसी कैटफ़िश), सी. गैरीपिनस (विदेशी, प्रतिबंधित कैटफ़िश जिसे अप्रकी मागुर/थाई मागुर भी कहा जाता है) और उनके हाइब्रिड की पहचान कर सकती है। डॉ. अपर्णा चौधरी, डॉ. ए. पवन कुमार और श्री धालोंगसाईह रियांग द्वारा विकसित



इस तकनीक का लाइसेंस मेसर्स मानवी साइंटिफिक सप्लायर्स प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे, महाराष्ट्र को तीन साल के लिए गैर-विशिष्ट आधार पर दिया गया। इस तकनीकी लाइसेंस के समझौते पर भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक (कार्यवाहक) डॉ. एन.पी. साहू ने 9 जनवरी 2026 को हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर पंचवर्षीय समीक्षा टीम (क्यूआरटी) की अध्यक्ष डॉ. बी. मीनाकुमारी, और डॉ. शमसुंदर बी.ए., डॉ. गोपालकृष्णन, डॉ. सुधीर रायज़ादा और डॉ. प्रवीण पुथरा (क्यूआरटी के सदस्य) भी गरिमामयी रूप से उपस्थित थे। यह तकनीक क्लैरियस मागुर (जो वर्तमान में लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची में शामिल है) के संरक्षण प्रयासों को मजबूत करने और साथ ही बूडर्स की सही पहचान कर मत्स्य पालन को बढ़ावा देने की उम्मीद है। डीएनए बारकोडिंग सहित वर्तमान पहचान विधियां भ्रामक या अप्रभावी हैं, इसलिए यह तकनीक एक महत्वपूर्ण समस्या का समाधान करती है।

स्वीकृत पेटेंट

1) पेटेंट आवेदन संख्या ,202411030339 : प्राकृतिक जल निकायों में बहते पानी से प्लास्टिक और कचरे को अलग करने वाला एक उपकरण :स्वीकृति की तिथि 09.01.2026 :

2) पेटेंट आवेदन संख्या :7130575 चमड़े का कपड़ा और उसे बनाने की प्रक्रिया ,स्वीकृति की तिथि 27.2.26 :

क्षमता निर्माण

स्मार्ट एकाकल्चर के लिए स्मार्ट फ्रीड

भा.कृ.अनु.प. -केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबई के मत्स्य पोषण, जैव रसायन और शरीर विज्ञान विभाग ने 7 से 27 जनवरी 2026 तक "स्मार्ट एकाकल्चर के लिए स्मार्ट फ्रीड" विषय पर 21-दिवसीय शीतकालीन स्कूल का सफलतापूर्वक आयोजन किया। यह कार्यक्रम भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (सीएयू), राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (एसएयू) और कृषि विज्ञान केंद्रों (के.वी.के.) के वैज्ञानिकों और संकाय सदस्यों के लिए तैयार किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के विभिन्न संस्थानों का प्रतिनिधित्व



करने वाले कुल 22 प्रतिभागियों (17 पुरुष और 5 महिला) ने भाग लिया। शीतकालीन स्कूल का उद्घाटन डॉ. बी. मीनाकुमारी (पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण; पूर्व डीडीजी - मत्स्य पालन, भा.कृ.अनु.प.; और पूर्व निदेशक, भा.कृ.अनु.प. -सीआईएफटी, कोच्चि) ने डॉ. एन. पी. साहू (निदेशक - कार्यवाहक, भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं.), डॉ. के. एन. मोहंता (विभागाध्यक्ष और कोर्स निदेशक), और डॉ. प्रेम कुमार (कोर्स समन्वयक) की उपस्थिति में किया। उद्घाटन सत्र के दौरान, स्मार्ट फ्रीड तकनीकों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों पहलुओं को शामिल करते हुए एक व्यापक प्रशिक्षण नियमावली जारी की गई। इस कार्यक्रम में नवीन फ्रीड विकास, प्रजाति- और प्रणाली-विशिष्ट पोषण, ब्रूडस्टॉक और लार्वा को खिलाने की रणनीतियाँ, फ्रीड निर्माण, और सतत जलीय कृषि के लिए उभरती हुई तकनीकों पर जोर दिया गया। विशेषज्ञ व्याख्यानों, व्यावहारिक प्रदर्शनों और प्रत्यक्ष प्रशिक्षण के माध्यम से, प्रतिभागियों ने फ्रीड दक्षता, मछलियों के स्वास्थ्य, उत्पादन की निरंतरता और जलीय कृषि किसानों की सामाजिक-आर्थिक भलाई में सुधार लाने के संबंध में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की; जिससे भारत में एक सुदृढ़ और तकनीकी रूप से उन्नत जलीय कृषि क्षेत्र के निर्माण की परिकल्पना को साकार करने में योगदान मिला।

उभरते रोगजनकों की निगरानी और प्रबंधन के लिए अगली पीढ़ी के निदान और कम्प्यूटेशनल तकनीकें

भा.कृ.अनु.प. द्वारा प्रायोजित 'उभरते रोगजनकों की निगरानी और प्रबंधन के लिए अगली पीढ़ी के निदान और कम्प्यूटेशनल तकनीकें' विषय पर 'उन्नत संकाय प्रशिक्षण केंद्र' (सीएफटी) कार्यक्रम का आयोजन भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई के 'जलीय पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग' द्वारा 4 से 24 फरवरी 2026 तक किया गया। इस 21-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जलीय जीवों के स्वास्थ्य प्रबंधन के उन्नत उपकरणों की व्यापक जानकारी प्रदान की गई; इनमें आणविक निदान, रियल-टाइम पीसीआर, CRISPR-Cas



एसेज़, अगली पीढ़ी की सीकेंसिंग, ट्रांसक्रिप्टोमिक्स, जीनोम एडिटिंग, बायोइन्फॉर्मेटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और रोगों की निगरानी के लिए मशीन लर्निंग के अनुप्रयोग शामिल थे। प्रतिभागियों को रोगजनकों की पहचान, टीकाकरण रणनीतियों,

विषाक्तता मूल्यांकन, जल गुणवत्ता प्रबंधन और जैव-सुरक्षित प्रयोगशाला पद्धतियों में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। पूरे भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों और संस्थानों से बारह संकाय सदस्यों और वैज्ञानिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। जाने-माने वैज्ञानिकों के विशेषज्ञ व्याख्यानों और क्षेत्र दौरों ने सीखने के अनुभव को और समृद्ध बनाया। सीएएफटी का आयोजन भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक डॉ. एन. पी. साहू के नेतृत्व में किया गया; इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. मेघा के. बेडेकर ने किया, जबकि इसका समन्वय डॉ. जीना के. और डॉ. अरुण शर्मा ने किया। कार्यक्रम के समापन समारोह सत्र में भा.कृ.अनु.प. के एडीजी (समुद्री मत्स्य पालन) डॉ. शुभदीप घोष मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे; उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए और जलीय पशु स्वास्थ्य तथा रोग प्रबंधन के क्षेत्र में उभरती चुनौतियों से निपटने की इस पहल की सराहना की।

आयन टॉरेंट एनजीएस प्लेटफॉर्म का उपयोग करके DNA अनुक्रमण और डेटा विश्लेषण



सेंट्रल एनजीएस फ़ैसिलिटी के तत्वावधान में 9-18 फरवरी 2026 तक "आयन टॉरेंट एनजीएस प्लेटफॉर्म का उपयोग कर डीएनए श्रृंखला और डेटा विश्लेषण" पर भा.कृ.अनु.प. द्वारा प्रायोजित एक छोटा कोर्स आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व के.मा.शि.सं. एनजीएस फ़ैसिलिटी की प्रभारी डॉ. अपर्णा चौधरी ने पाठ्यक्रम निदेशक के रूप में किया, जबकि डॉ. ए. पवन कुमार और डॉ. किरण डी. रसाल ने पाठ्यक्रम समन्वयक

के रूप में कार्य किया। पूरे भारत से भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, विश्वविद्यालयों और पशु चिकित्सा महाविद्यालयों के पंद्रह वैज्ञानिकों और संकाय सदस्यों (10 पुरुष और 5 महिलाएँ) ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक डॉ. एन. पी. साहू ने किया, जबकि भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के पूर्व निदेशक डॉ. गोपाल कृष्ण ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर उपस्थित थे। इस प्रशिक्षण में सैंपल और लाइब्रेरी तैयार करने, एनजीएस वर्कफ़्लो, आयन टॉरेंट प्लेटफॉर्म के संचालन और बायोइन्फ़ॉर्मेटिक्स-आधारित डेटा विश्लेषण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। ओपन-सोर्स टूल्स का इस्तेमाल करके मेटाजीनोम, माइटोजीनोम और ट्रांसक्रिप्टोम विश्लेषण पर हुए प्रैक्टिकल सेशन की खूब सराहना की गई।

टीकों और निदान के लिए CRISPR-Cas-आधारित जीनोम संपादन

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने भा.कृ.अनु.प.-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान और भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के सहयोग से, 9-13 मार्च 2026 के दौरान, 'टीकों और निदान के लिए CRISPR-Cas-आधारित जीनोम संपादन के अनुप्रयोग' विषय पर एक पाँच-दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 'टीकों और निदान' पर भा.कृ.अनु.प.-सीआरपी के अंतर्गत आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में कृषि, पशुधन, मत्स्य पालन, जैव प्रौद्योगिकी और जैव चिकित्सा विज्ञान के वैज्ञानिक और पेशेवर एक साथ आए, ताकि जीनोम संपादन तकनीकों में उनकी विशेषज्ञता को बढ़ाया जा सके। विशेषज्ञों के व्याख्यानों और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से, प्रतिभागियों ने CRISPR जीव विज्ञान, gRNA डिज़ाइन, निदान, टीका विकास, जैव सूचना विज्ञान, जैव सुरक्षा, नैतिकता और विनियामक ढाँचों में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। प्रदर्शनों में CRISPR-Cas12a निदान, जीवाणु टीका विकास और स्तनधारी कोशिका इंजीनियरिंग शामिल थे। एक व्यापक 18-अध्यायी प्रशिक्षण नियमावली भी वितरित की गई। इस कार्यक्रम ने CRISPR-आधारित अनुसंधान में राष्ट्रीय क्षमता को सुदृढ़ किया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में टीकों और निदान के क्षेत्र में अंतर्विषयक सहयोग और नवाचार को बढ़ावा मिला।

मात्स्यिकी पालन सहकारी समितियों के लिए जलीय-व्यापार के अवसर

एग्री-बिजनेस इनक्यूबेशन (एबीआई) सेंटर और सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस इन फिशरीज़ एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट (सीईएफ़ईडी), भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई ने 27 और 29 जनवरी 2026 को "मत्स्य सहकारी समितियों के लिए एक्का-बिजनेस के अवसर" विषय पर दो एक-दिवसीय आउटरीच और जागरूकता प्रशिक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किए। इन कार्यक्रमों का आयोजन मत्स्य सहकारी समितियों के सदस्यों के बीच उद्यमिता, नवाचार और टिकाऊ एक्का-बिजनेस के अवसरों के प्रति जागरूकता और व्यावहारिक समझ को बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया था। इन कार्यक्रमों में महाराष्ट्र जिला एकवीरा मत्स्य पालन और कृषि सहकारी संस्था मर्यादित, अरनाला, और खारेकुरान मच्छीमार सर्वोदय सहकारी संस्था मर्यादित, खारेकुरान, पालघर से 84 प्रतिभागियों

(65 महिलाएं और 19 पुरुष) ने भाग लिया। भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. की इन्क्यूबेट कंपनी, एकाडोर वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड की उद्यमशीलता यात्रा पर एक प्रेरणादायक सत्र आयोजित किया गया, जिसने सफल मत्स्य-आधारित उद्यमों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान की। अतिरिक्त सत्रों में मूल्य-वर्धित मछली उत्पाद, मछली खाद तकनीक, जलीय-पर्यटन और मत्स्य पालन में ड्रोन के उपयोग जैसे विषयों को शामिल किया गया। इन प्रौद्योगिकी-आधारित पहलों ने आय के विविधीकरण, महिला सशक्तिकरण और सहकारी उद्यमशीलता के अवसरों को उजागर किया।

संमेलन/संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशालाएँ

सजावटी मछली मेले और एकेरियम विज्ञान कार्यशाला के माध्यम से विज्ञान, उद्योग और शौकीनों को जोड़ना

31 जनवरी से 1 फरवरी 2026 के दौरान 'सजावटी मछली मेला और एकेरियम विज्ञान कार्यशाला' का आयोजन किया गया, जो महाराष्ट्र और भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. में सजावटी मत्स्य पालन के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ। महाराष्ट्र एकाकल्चर फार्मर्स एसोसिएशन (माफा) के साथ मिलकर आयोजित और उद्योग भागीदारों के सहयोग से हुए इस कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक एकेरियम प्रबंधन को बढ़ावा देना, सजावटी मछली पालन को सुदृढ़ करना और शोधकर्ताओं, किसानों, उद्योग से जुड़े लोगों तथा शौकीनों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन भा.कृ.अनु.प. के उप महानिदेशक (मात्स्यिकी और शिक्षा), डॉ. जे. के. जेना ने महाराष्ट्र सरकार, एनएफडीबी और माफा के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया। एकेरियम विज्ञान कार्यशाला में पाँच विषयगत मॉड्यूल शामिल थे, जिनमें एकेरियम प्रबंधन, मछली का स्वास्थ्य, पोषण, प्रजनन और एकास्केपिंग जैसे विषय शामिल थे; प्रत्येक सत्र में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सजावटी मछली मेले में 10,000 से ज़्यादा आगंतुक आए, जो भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. में अब तक का सबसे ज़्यादा रिकॉर्ड है। ग्यारह जानी-मानी कंपनियों ने 25 एग्ज़िबिशन स्टॉल्स के ज़रिए अपने उत्पादन और प्रौद्योगिकी दिखाए। दूसरी खास बातों में 'एका फेस्ट' (छात्रों के लिए ड्रॉइंग और पेंटिंग प्रतियोगिता) और 'बेस्ट एकेरियम फिश' प्रतियोगिता शामिल थे, जिसमें 220 लोगों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम ने लोगों में जागरूकता बढ़ाने, उद्यमियों को बढ़ावा देने और सजावटी मछली पालन क्षेत्र के विकास के लिए एक नया स्टैंडर्ड बनाने में कामयाबी हासिल की।



सक्षम मात्स्यिकी में उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र (E3F): हितधारकों की बैठक और नीतिगत गोलमेज सम्मेलन

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के 'उद्योग-अकादमिक सहयोग कार्यक्रम' के तहत, एफईईएस विभाग ने 11 मार्च 2026 को भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई में "मत्स्य पालन में उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम बनाना (E3F): हितधारकों की बैठक और नीति गोलमेज सम्मेलन" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उद्यमियों, उद्योग जगत के नेताओं, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं, स्टार्ट-अप्स और छात्रों को एक साझा मंच पर लाना था, ताकि मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दिया जा सके, संस्थागत संबंधों को मजबूत किया जा सके और उद्यमिता-आधारित विकास को प्रोत्साहित किया जा सके। सभा को संबोधित करते हुए, प्रभारी निदेशक डॉ. देबजीत शर्मा ने स्थायी आजीविका के सृजन और क्षेत्रीय परिवर्तन को गति देने



में उद्यमिता की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डॉ. सुजीत कुमार शुक्ला, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-सिरकोट ने युवाओं को नवप्रवर्तक और रोजगार सृजक बनने के लिए प्रोत्साहित किया, तथा आत्मनिर्भरता और प्रौद्योगिकी-आधारित उद्यम विकास पर जोर दिया। इस कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण "इनोवेशन बुकलेट" का विमोचन था, जिसमें छात्रों द्वारा किए गए इनोवेशन और उद्यमिता से जुड़े विचारों को प्रदर्शित किया गया था। प्रदर्शनी में ए आई और एमएल पर आधारित सलाह देने वाले प्लेटफॉर्म, मत्स्य पालन सेवाओं के लिए डिजिटल एप्लिकेशन, मछली से बने वैल्यू-एडेड उत्पाद, और 'कचरे से धन' बनाने वाली तकनीकें शामिल थीं; जैसे - मछली की खाद, मछली के छिलकों से बने उत्पाद, और मछली की खाल से बना पेटेंटेड चमड़ा। उद्यमिता के अनुभवों, स्टार्टअप की सफलता की कहानियों और नीतिगत चुनौतियों पर हुए परस्पर संवादात्मक सत्रों ने सभी संबंधित पक्षों (स्टेकहोल्डर्स) के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा दिया। इस सम्मेलन ने उद्योग और शिक्षा जगत के बीच की साझेदारी को सफलतापूर्वक मज़बूत किया, और भारत में एक जीवंत व टिकाऊ मत्स्य उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए।

किसान और मछुआरा मेला

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई ने भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.अनु.प.-आईएसआरआई) के सहयोग से, 20-21 मार्च 2026 को "किसान सारथी 2.0: संवर्धन, संचालन, रखरखाव और सहायता" परियोजना के तहत दो दिवसीय 'किसान और मछुआरा मेला' आयोजित किया। इस परियोजना को भा.कृ.अनु.प., इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, और डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन का समर्थन प्राप्त है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मत्स्य पालन क्षेत्र में अनुसंधान, डिजिटल तकनीकों और जमीनी स्तर पर उनके उपयोग के बीच संबंधों को मज़बूत करना था। डॉ. अर्पिता शर्मा के स्वागत भाषण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसके बाद 'किसान सारथी 2.0' के (प्रमुख अन्वेषक) डॉ. संजीव कुमार ने एक प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने इस प्लेटफॉर्म की विशेषताओं और लाभों पर प्रकाश डाला। भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक डॉ. एन.पी. साहू ने मछली पालकों और मछुआरों को सशक्त बनाने में डिजिटल नवाचारों की भूमिका पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में कुल 500 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें महाराष्ट्र के वैज्ञानिक, शिक्षाविद, छात्र, मछली पालक, मछुआरे, मछली विक्रेता और अन्य हितधारक शामिल थे। इस मेले ने ज्ञान साझा करने, हितधारकों के बीच संवाद स्थापित करने और डिजिटल परामर्श सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी मंच प्रदान किया, जिससे मत्स्य पालन क्षेत्र के सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिला।



कार्यक्रम

संवैधानिक भावनाओं का आयोजन :
भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई में 77वाँ गणतंत्र दिवस

77वाँ गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक (कार्यवाहक), डॉ. एन.पी.साहू ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्रों, प्रशिक्षुओं और विभिन्न विभागों तथा प्रशासनिक अनुभागों के प्रमुखों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अपने संबोधन में, डॉ. साहू ने स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं को श्रद्धांजली अर्पित की और "विकसित भारत" (विकसित देश) के लक्ष्य की दिशा में भारत की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कृषि, शिक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में राष्ट्र की उपलब्धियों पर जोर दिया, और साथ ही खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में आत्मनिर्भरता के महत्व पर भी बल दिया। डॉ. साहू ने मत्स्य शिक्षा, मानव संसाधन विकास, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी प्रसार, उद्यमिता और स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने में भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के महत्वपूर्ण



योगदानों को भी रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान से जुड़े सभी लोगों को राष्ट्र-निर्माण में सत्यनिष्ठा, नवाचार और उत्कृष्टता के मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। इस समारोह का समापन देशभक्तिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हुआ। इसी तरह के गणतंत्र दिवस समारोह भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के क्षेत्रीय केंद्रों-कोलकाता, मोतीपुर, रोहतक, काकीनाडा और पवारखेड़ा में भी आयोजित किए गए।



महाराष्ट्र का पहला मल्टीस्पेशलिटी मछली क्लिनिक और मोबाइल मछली देखभाल इकाई शुरू हुई।

"हीलिंग फिन्स" - महाराष्ट्र के पहले मल्टीस्पेशलिटी फिश क्लिनिक और मोबाइल फिश केयर यूनिट का शिलान्यास समारोह 22 मार्च 2026 को भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई में आयोजित किया गया। शिलान्यास महाराष्ट्र सरकार में सूचना प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक मामलों के माननीय मंत्री तथा मुंबई उपनगरीय क्षेत्र के पालक मंत्री, एडवोकेट आशीष शेलार द्वारा किया गया। इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिनमें वर्सोवा निर्वाचन

क्षेत्र के विधायक श्री हारून राशिद खान, मुंबई उपनगरीय क्षेत्र के जिला कलेक्टर (आईएस) श्री सौरभ कटियार, और भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के निदेशक डॉ. एन.पी. साहू शामिल थे। मुंबई उपनगरीय क्षेत्र की जिला योजना समिति के सहयोग से 'जलीय पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग' द्वारा विकसित इस सुविधा का उद्देश्य मछली स्वास्थ्य से संबंधित व्यापक सेवाएँ प्रदान करना है, जिसमें रोगों की पहचान, उपचार और परामर्श सहायता शामिल है। मछली और झींगा पालकों, एक्वेरियम मालिकों तथा सजावटी मछलियों के शौकीनों को ध्यान में रखकर तैयार की गई यह पहल चार-स्तरीय दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें क्लिनिकल सेवाएँ, मोबाइल आउटरीच, उन्नत निदान और टेलीहेल्थ सहायता शामिल हैं। इस कार्यक्रम में 250 से अधिक हितधारकों ने भाग लिया, जो महाराष्ट्र में जलीय पशु स्वास्थ्य प्रबंधन और मत्स्य विकास को सुदृढ़ बनाने में इसके महत्व को दर्शाता है।

मत्स्य पालन के केंद्र में महिलाएँ: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और आईवाईडब्ल्यूएफ 2026 का उत्सव

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई ने 8 मार्च 2026 को मुंबई के वर्ली और वर्सोवा मछली पकड़ने वाले गांवों में, भा.कृ.अनु.प. के.मा.शि.सं. के निदेशक (कार्यवाहक) डॉ. एन.पी.साहू के नेतृत्व में, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष (आईवाईडब्ल्यूएफ) 2026 मनाया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मत्स्य पालन मूल्य श्रृंखला में मछुआरा महिलाओं के अमूल्य योगदान को पहचानना और राष्ट्रीय विकास में उनकी भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। इस समारोह में कुल 97 मछुआरा महिलाओं, 42 छात्रों और 10 वैज्ञानिकों ने भाग



लिया। प्रगतिशील मछुआरा महिलाओं को सम्मानित किया गया, और किसानों व वैज्ञानिकों के बीच हुए संवाद सत्रों ने आजीविका से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। विशेषज्ञों ने आजीविका को बेहतर बनाने के लिए मूल्य-वर्धित मछली उत्पादों, उद्यमिता, आय के स्रोतों में विविधता लाने और महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के महत्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में महिलाओं के सशक्तिकरण, मत्स्य पालन के क्षेत्र में उनके योगदान को मान्यता देने तथा वैज्ञानिक एवं उद्यमशीलता संबंधी उपायों के माध्यम से सतत आय-सृजन गतिविधियों को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया गया।

नई पहलें

BIMReN-BOBP ट्विनिंग अनुसंधान अनुदान

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अनंत पी.एस. ने श्रीलंका के जाफना विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में 2 महीने के संकाय सदस्य विनिमय कार्यक्रम (9.2.26 से 19.4.26) में हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम 'सतत पाक खाड़ी मत्स्य पालन' पर आधारित एक अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी परियोजना का हिस्सा था। BoBP-BIMReN ट्विनिंग रिसर्च ग्रांट द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान परियोजना "पाक खाड़ी क्षेत्र में मत्स्य पालन पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखना: प्रबंधन विकल्पों, आजीविका और मछुआरों के दृष्टिकोण का आकलन" के तहत, मात्स्यिकी विस्तार, सांख्यिकी एवं समाज विज्ञान प्रभाग के शोध विद्वानों और फैकल्टी सदस्यों ने 18-21 मार्च 2026 को श्रीलंका के मतारा स्थित रूहना विश्वविद्यालय में आयोजित 'मरीन सोशल साइंस कॉन्फ्रेंस साउथ एशिया' में भाग लिया।

संस्थान की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता – 2026

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता-2026 का आयोजन स्नातकोत्तर स्कूल छात्र संघ (PGSSU) द्वारा 27 से 30 मार्च 2026 के बीच किया गया। उद्घाटन समारोह में एक भव्य मार्च पास्ट, स्वागत भाषण, खेल मशाल रिले, शपथ ग्रहण समारोह और निदेशक द्वारा खेलकूद प्रतियोगिता की औपचारिक घोषणा शामिल थी। इस चार दिवसीय कार्यक्रम ने छात्रों, शोधार्थियों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को खेल भावना, टीम वर्क और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के एक जीवंत उत्सव में एक साथ ला दिया। प्रतिभागियों ने क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, शतरंज, एथलेटिक्स, खो-खो, थ्रोबॉल और रस्साकशी सहित विभिन्न प्रकार के इनडोर और आउटडोर खेलों में पूरे उत्साह के साथ प्रतिस्पर्धा की। इन



प्रतियोगिताओं ने पूरे संस्थान समुदाय में असाधारण प्रतिभा, दृढ़ संकल्प और टीम भावना का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का समापन एक पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित किया गया। शार्क स्ट्राइकर्स (येलो हाउस) वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता-2026 के समग्र चैंपियन के रूप में उभरे, जिसने इस सफल और प्रेरणादायक खेल आयोजन का एक यादगार समापन किया।

इस तिमाही के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन (जनवरी-मार्च 2026)

गुणशेखरन एच, नजवा केवी, निदर्शन एनसी, पोरकोडी एम, सिंह एलएस, रसल केडी, ब्राह्मणे एमपी, गोस्वामी एम, सो नवाने एए 2026. टैकिनोटस ब्लोची एमएसएनटीबी जीन का लक्षण वर्णन और कॉंग्रेट जीआरएनए वेक्टर का निर्माण। जैविक मैक्रोमोलेक्युलस का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 1;364:152225.8.5 (आईएसआई प्रभाव कारक: 8.5; एनएएस प्रभाव कारक: 14.50)

पुरस्कार/मान्यता

उत्कृष्टता की पहचान: भा.कृ.अनु.प. -के.मा.शि.सं. के वैज्ञानिक बासा, बिहार के फेलो चुने गए।



डॉ. आशुतोष डी. देव



डॉ. ए.के. वर्मा



डॉ. प्रेम कुमार

वैज्ञानिक उत्कृष्टता की एक उल्लेखनीय पहचान के रूप में, भा.कृ.अनु.प. -के.मा.शि.सं. के तीन प्रधान वैज्ञानिकों डॉ. आशुतोष डी. देव, डॉ. अजीत कुमार वर्मा और डॉ. प्रेम कुमार को 24 मार्च 2026 को बिहार के डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में, मत्स्य विज्ञान, अनुसंधान और शैक्षणिक विकास में उनके विशिष्ट योगदान के लिए, बिहार कृषि विज्ञान अकादमी (बासा) की प्रतिष्ठित फेलोशिप से सम्मानित किया गया। डॉ. अर्पिता शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं मात्स्यिकी विस्तार, सांख्यिकी एवं समाज विज्ञान विभाग की प्रमुख, को 6 मार्च 2026 को मुंबई स्थित 'एनवायरनमेंटलिस्ट्स प्रोग्राम ट्रस्ट' द्वारा "महिला उपलब्धि पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 10 फरवरी 2026 को मुंबई स्थित एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय में 'कैरियर उन्नति योजना' के अंतर्गत कॉलेज शिक्षकों की पदोन्नति हेतु गठित 'स्क्रीनिंग-सह-मूल्यांकन समिति' में एक विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

आमंत्रित व्याख्यान

डॉ. सौरभ कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ने लघु पाठ्यक्रम "जलीय पर्यावरण में उभरते प्रदूषकों के लिए उन्नत विश्लेषणात्मक तकनीकें" में "जलीय पर्यावरण प्रबंधन के लिए बायोमार्कर" डॉ. मुरलीधर पी. आंडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने "मत्स्य पालन में उन्नत जलीय कृषि पद्धतियाँ" विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "बायोफ्लॉक तकनीक और एकीकृत बहु-पोषी जलीय कृषि प्रणालियाँ" विषय पर डॉ. नेहा डब्ल्यू. कुरैशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 7-27 जनवरी 2025 तक भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. में "स्मार्ट जलीय कृषि के लिए स्मार्ट फ़ीड" विषय पर आयोजित शीतकालीन स्कूल में कृषि क्षेत्र में बौद्धिक संपदा अधिकारों पर व्याख्यान दिया।

प्रशासन

नव नियुक्ति

क्रम संख्या	नाम और पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1.	श्री सत्येंद्र कुमार, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	1 जनवरी 2026
2.	श्री अधाने सौरभ गंगाधर, सहायक	30 जनवरी 2026
3.	श्री अर्चित मिश्रा, सहायक	9 फरवरी 2026
4.	श्री आशीष चौबे, वरिष्ठ प्रशा. अधिकारी	20 फरवरी 2026

पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम और पदनाम	पदोन्नत पद	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री संभाजी एस. शेलके, कनिष्ठ लिपिक	वरिष्ठ लिपिक	1 जनवरी 2026
2.	श्री किशोर बोस, वरिष्ठ लिपिक- कोलकाता केंद्र	सहायक	1 जनवरी 2026
3.	श्री महेश वाघेला, सहायक	सहायक प्रशा. अधिकारी	1 जनवरी 2026
4.	श्री निनाद कांदलगाँवकर, कनिष्ठ लिपिक	वरिष्ठ लिपिक	1 जनवरी 2026

स्थानांतरण/प्रतिनियुक्ति

क्रम सं.	अधिकारी का नाम, वर्तमान पद	स्थानांतरित	के लिए स्थानांतरण	से प्रभावी
1.	श्री सुरेन्द्र, सहायक	के.मा.शि.सं. मुंबई	के.मा.शि.सं. रोहतक	08 जनवरी 2026
2.	श्री विजयपाल बिजारणियाँ, प्रशा. अधिकारी	के.मा.शि.सं. मुंबई	भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली	19 जनवरी 2026
3.	डॉ. स्वदेश प्रकाश, प्रधान वैज्ञानिक	के.मा.शि.सं. मुंबई	भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली	30 जनवरी 2026

सेवानिवृत्त

क्रम संख्या	नाम और पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	श्री सत्येंद्र प्रजापत, वरिष्ठ तकनीशियन	31 जनवरी 2026
2.	डॉ. श्रीनिवास जहगीरदार, प्रधान वैज्ञानिक	28 फरवरी 2026
3.	श्री प्रताप कुमार दास, मुख्य तकनीकी अधिकारी	28 फरवरी 2026

पश्चोत्तरी

कौन-सी मछली रंग बदलने और अपने आस-पास के माहौल में घुल-मिल जाने की अपनी क्षमता के लिए मशहूर है? (अपना जवाब mdarpan@cife.edu.in पर भेजें; जो व्यक्ति सबसे पहले सही जवाब भेजेगा उसका नाम मत्स्य दर्पण के अगले अंक में छपेगा)

प्रकाशक

डॉ. एन.पी. साह
निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफई,
ऑफ यारी रोड, वर्सोवा, अंधेरी (पश्चिम), मुंबई-400061

संपादकीय मण्डल

डॉ. सौरभ कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक
डॉ. दयाल देवदास, वैज्ञानिक
श्री जगदीशन ए.के., संयुक्त निदेशक (ओएल)
श्रीमती रेखा नायर, एसीटीओ

संपर्क करें

निदेशक, आईसीएआर- केंद्रीय मत्स्य पालन शिक्षा संस्थान
पंच मार्ग, ऑफ यारी रोड, वर्सोवा, अंधेरी (पश्चिम),
मुंबई- 400 061
संपर्क करें: +91-22-26361446/7/8
ईमेल: निदेशक@cife.edu.in
फैक्स: +91-22-26361573
वेबसाइट: <https://www.cife.edu.in>



VOL-31(1) CIFE Publication Serial No. MD/101/2026

JANUARY-MARCH 2026

INSIDE

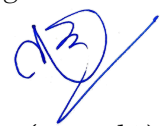
From the Director's Desk	01
XIX Convocation	02
Research achievement	02
Technology developed	03
Patent Granted	03
Technology License	03
Capacity Building	04
Ornamental Fish fair	06
E3F: Roundtable Conf.	06
Kisan and Machuara Mela	07
77 th Republic Day	07
Fish Clinic	07
IYWF 2026	08
CIFE Annual Sports Meet	09
Best Publication	09
Awards/Recognition	09
Administration	10
Recognition of Excellence	10
Quiz	10

Director's Desk

It gives me great pleasure to present the January–March 2026 issue of *Matsya Darpan*, showcasing the major achievements, innovations, and outreach initiatives undertaken by ICAR-Central Institute of Fisheries Education (ICAR-CIFE), Mumbai. The activities



highlighted in this issue reflect our unwavering commitment to excellence in fisheries education, research, technology development, entrepreneurship promotion, and stakeholder empowerment. The quarter was marked by several significant milestones. The XIX Convocation of ICAR-CIFE celebrated the academic achievements of 143 postgraduate and doctoral graduates, reinforcing our role as a premier institution for fisheries higher education and human resource development. Our research teams made notable advances in aquaculture diversification and conservation through the development of captive seed production technology for Peacock Eel and nutritional protocols for brood stock development of Olive Barb. The licensing of a molecular diagnostic technology for rapid identification of indigenous and exotic catfish species further exemplifies our efforts towards technology commercialization and societal impact. Capacity building remained a priority through specialized training programs on smart aquaculture nutrition, next-generation diagnostics, genomics, and computational tools. These initiatives enhanced the knowledge and skills of scientists, academicians, and professionals from across the country. The Institute also strengthened its engagement with farmers, entrepreneurs, industry stakeholders, and fisher communities through programs such as the Ornamental Fish Fair and Aquarium Science Workshop, Entrepreneurship Ecosystem in Fisheries (E3F), Aqua-Business Opportunities for Fisheries Cooperatives, and the *Kisan and Machuara Mela*. A landmark achievement during this period was the foundation stone laying of “Healing Fins” – Maharashtra’s first Multispecialty Fish Clinic and Mobile Fish Care Unit, which will significantly strengthen aquatic animal healthcare services. As we move forward, ICAR-CIFE remains dedicated to fostering innovation, sustainability, and entrepreneurship while contributing to the vision of Viksit Bharat 2047. I sincerely appreciate the efforts of our scientists, faculty, students, staff, alumni, industry partners, and stakeholders whose collective contributions continue to elevate the Institute’s national and global standing.


(N.P. Sahu)

Academic

Empowering the Next Generation of Fisheries Professionals: ICAR-CIFE's XIX Convocation

ICAR-Central Institute of Fisheries Education (ICAR-CIFE), Mumbai, celebrated its XIX Convocation on 21 February 2026, marking a significant milestone in fisheries higher education and human resource development. During the ceremony, Dr. N. P. Sahu, Director and Vice-Chancellor of ICAR-CIFE, conferred degrees upon 94 Master's and 49 Ph.D. graduates. The Chief Guest, Dr. Mangi Lal Jat, Secretary, DARE and Director General, ICAR, awarded gold medals to meritorious students and delivered the Convocation Address. Dr. Joykrushna Jena, Deputy Director General (Fisheries Science) and In-charge of the Education Division, ICAR, graced the occasion as Guest of Honour. In his address, Dr. Jat highlighted the pivotal role of professional fisheries education in strengthening India's rapidly expanding fisheries sector, which supports the livelihoods of nearly 30 million people. He emphasized the growing importance of advanced aquaculture technologies, including resource-efficient production systems, genetically improved strains, innovative feeds, and health management



practices. He noted that these developments present immense opportunities for fisheries professionals to emerge as entrepreneurs and technology-driven leaders. Appreciating ICAR-CIFE's efforts in promoting innovation, start-ups, and entrepreneurship, he remarked that such initiatives will contribute significantly to building a knowledge-based economy and realizing the vision of 'Viksit Bharat 2047'. He congratulated the graduating students, particularly the medal winners, and encouraged ICAR-CIFE to continue its pursuit of excellence in fisheries education, research, and innovation.

Research

From Nutrition to Reproduction: Captive Broodstock Development of Olive Barb

Puntius sarana (Hamilton, 1822), commonly known as Sarputi or Olive Barb, is highly valued for both its food and ornamental importance. It is a popular food fish in the eastern and north-eastern regions of India, particularly in Assam and other North-Eastern states, West Bengal, Bihar, and Odisha. From a nutritional standpoint, *P. sarana* is an excellent source of high-quality protein, containing approximately 20–21% protein and 3% lipid, along with essential minerals such as calcium, phosphorus, iron, and potassium. Its superior nutritional profile and consumer preference make it a promising candidate for aquaculture diversification and conservation-based aquaculture initiatives. Captive broodstock development is a critical prerequisite for ensuring reliable and sustainable quality seed production. Recognizing this need, ICAR-CIFE, with financial support from the National Fisheries Development Board (NFDB), has developed a nutritional strategy for the successful captive maturation of *P. sarana* broodstock. Through systematic dietary interventions, the optimum dietary protein and lipid requirements for broodstock maturation were standardized at 25% and 6%, respectively. The developed protocol facilitates improved gonadal development, broodstock health, and reproductive performance under captive conditions, thereby contributing to the establishment of a sustainable seed production system for this commercially important indigenous fish species.



Technology Developed

Enhancing Aquaculture Diversification through Peacock Eel Breeding and Seed Production

Macrognathus aral (Peacock Eel) is a commercially important fish species valued both as a food fish and an ornamental fish in the states of Assam, Bihar, Chhattisgarh, West Bengal, and the North-Eastern region of India. Owing to its high market demand and dependence on wild stocks, there has been a growing need for the development of sustainable seed production technologies for this species. The research team of CIFE has successfully developed a comprehensive captive seed production package for Peacock Eel, marking a significant advancement in the conservation and aquaculture of this indigenous species. The technology encompasses all critical stages of production, including captive broodstock development, induced breeding protocols, larval rearing, and seed production under controlled hatchery conditions. The successful standardization of breeding and larval rearing techniques is expected to support species conservation, livelihood enhancement, and diversification of freshwater aquaculture in eastern and north-eastern India. This achievement represents an important step toward the sustainable utilization and commercialization of Peacock Eel, contributing to both biodiversity conservation and the growth of the ornamental fisheries sector in the country.



Technology commercialization

Innovative Molecular Tool for Catfish Authentication Licensed by ICAR-CIFE

ICAR-CIFE, Mumbai has licensed a technology that can identify *Clarias magur* (indigenous catfish), *C. gariepinus* (exotic, banned catfish also known as African magur/ Thai magur) and their hybrid in a single PCR reaction. The technology developed by Dr. Aparna Chaudhari, Dr. A. Pavan Kumar and Mr. Dhalongsaih Reang was licensed to M/s Manvi Scientific Suppliers Pvt. Ltd., Thane, Maharashtra in non-exclusive mode for three years. The agreement for the licensing of the technology was signed by Director, ICAR-CIFE on 9th January 2026 in the gracious presence of Dr. B. Meenakumari, Chairman of the Quinquennial Review Team (QRT) and Members, QRT. The technology is expected to strengthen conservation efforts of *Clarias magur* that is currently listed as 'Endangered', and also promote aquaculture by correct identification of the brooders. Since the current identification methods including DNA barcoding are confusing or ineffective, this technology addresses a significant concern.



Patent Granted

1. Patent Application No: 202411030339, A device for separating plastic and debris from flowing water in natural water bodies: Date of grant: 27 February 2026.
2. Patent no. 7130575: Leather Fabric and a Process for its Preparation, Date of grant: 09 January 2026

Capacity Building

Smart Feed for Smart Aquaculture

The Fish Nutrition, Biochemistry and Physiology Division, ICAR-Central Institute of Fisheries Education (ICAR-CIFE), Mumbai, successfully organized a 21-day Winter School on “*Smart Feed for Smart Aquaculture*” from 7–27 January 2026. The programme was designed for scientists and faculty members



from ICAR institutes, Central Agricultural University (CAU), State Agricultural Universities (SAUs), and Krishi Vigyan Kendras (KVKs). A total of 22 participants (17 male and 5 female) representing various institutions across the country attended the training programme. The Winter School was inaugurated by Dr. B. Meenakumari, former Chairperson, National Biodiversity Authority, former DDG (Fisheries), ICAR, and former Director, ICAR-CIFT, Kochi, in the presence of Dr. N. P. Sahu, Director (Acting), ICAR-CIFE; Dr. K. N. Mohanta, Head of the Division and Course Director; and Dr. Prem Kumar, Course Coordinator. A comprehensive training manual covering both theoretical and practical aspects of smart feed technologies was released during the inaugural session. The programme emphasized innovative feed development, species- and system-specific nutrition, broodstock and larval feeding strategies, feed formulation, and emerging technologies for sustainable aquaculture. Through expert lectures, practical demonstrations, and hands-on training, participants gained valuable insights into improving feed efficiency, fish health, production sustainability, and the socio-economic well-being of aquaculture farmers, contributing to the vision of a resilient and technologically advanced aquaculture sector in India.

Next-Generation Diagnostics and Computational Techniques for Emerging Pathogen Surveillance and Management

The ICAR-sponsored Centre for Advanced Faculty Training (CAFT) programme on “*Next-Generation Diagnostics and Computational Techniques for Emerging Pathogen Surveillance and Management*” was organized by the Aquatic Environment and Health Management Division, ICAR-CIFE, Mumbai, from



4–24 February 2026. The 21-day training provided comprehensive exposure to advanced aquatic animal health management tools, including molecular diagnostics, real-time PCR, CRISPR-Cas assays, next-generation sequencing, transcriptomics, genome editing, bioinformatics, artificial intelligence, and machine learning applications for disease surveillance. Participants also received hands-on training in pathogen detection, vaccination strategies, toxicity assessment, water quality management, and biosecure laboratory practices. Twelve faculty members and scientists from leading universities and institutions across India participated in the programme. Expert lectures by renowned scientists and field visits enriched the learning experience. The CAFT is conducted under the leadership of Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE, the programme was directed by Dr. Megha K. Bedekar, with coordination by Dr. Jeena K. and Dr. Arun Sharma. The programme concluded with a valedictory session graced by Dr. Shubhadeep Ghosh, ADG (Marine Fisheries), ICAR, who appreciated the initiative for addressing emerging challenges in aquatic animal health and disease management.

DNA Sequencing Using Ion Torrent NGS Platform and Data Analysis



An ICAR-sponsored Short Course on “*DNA Sequencing Using Ion Torrent NGS Platform and Data Analysis*” was organized from 9–18 February 2026 under the aegis of the Central NGS Facility. Fifteen scientists and faculty members (10 men and 5 women) from ICAR institutes, universities, and veterinary colleges across India participated in the training. The course was inaugurated by Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE, while Dr. Gopal Krishna, Former Director, ICAR-CIFE, graced the occasion as Chief Guest. The training provided

comprehensive exposure to sample and library preparation, NGS workflows, Ion Torrent platform operation, and bioinformatics-based data analysis. Hands-on sessions on metagenome, mitogenome, and transcriptome analyses using open-source tools were highly appreciated.

CRISPR-Cas Mediated Genome Editing for Vaccines and Diagnostics

ICAR–Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Mumbai, in collaboration with ICAR–Indian Veterinary Research Institute (IVRI) and ICAR–Indian Agricultural Research Institute (IARI), organized a five-day National Training Programme on “*Application of CRISPR-Cas Mediated Genome Editing for Vaccines and Diagnostics*” during 9–13 March 2026 under the ICAR-CRP on Vaccines and Diagnostics. The programme brought together scientists and professionals from agriculture, livestock, fisheries, biotechnology, and biomedical sciences to enhance expertise in genome editing technologies. Through expert lectures and hands-on training, participants gained practical experience in CRISPR biology, gRNA design, diagnostics, vaccine development, bioinformatics, biosafety, ethics, and regulatory frameworks. Demonstrations included CRISPR-Cas12a diagnostics, bacterial vaccine development, and mammalian cell engineering. A comprehensive 18-chapter training manual was distributed. The programme strengthened national capacity in CRISPR-based research, fostering interdisciplinary collaboration and innovation in vaccines and diagnostics across multiple sectors.



Aqua-Business Opportunities for Fisheries Cooperatives



The Agri-Business Incubation (ABI) Centre and the Centre of Excellence in Fisheries Entrepreneurship Development (CEFED), ICAR-CIFE, Mumbai, successfully organized two one-day outreach and sensitization training on “*Aqua-Business Opportunities for Fisheries Cooperatives*” on 27 and 29 January 2026. The programs were organized to enhance awareness and practical understanding of entrepreneurship, innovation, and sustainable aqua-business opportunities among fisheries cooperative members. The programme attracted 84 participants (65 women and 19 men) from Maharashtra Jilha Ekvira Fisheries

& Farming Sahakari Sanstha Maryadit, Arnala, and Kharekuran Macchimar Sarvodaya Sahakari Sanstha Maryadit, Kharekuran, Palghar. The technical sessions focused on translating scientific knowledge into viable business opportunities. Participants were introduced to scalable aqua-enterprises, government schemes, financial assistance, and incubation support mechanisms. An inspiring session on the entrepreneurial journey of Aquadore Ventures Pvt. Ltd., an ICAR-CIFE incubatee, provided practical insights into successful fisheries-based enterprises. Additional sessions covered value-added fish products, fish manure technology, aqua-tourism, and drone applications in fisheries. These technology-driven interventions highlighted opportunities for income diversification, women’s empowerment, and cooperative entrepreneurship.

Seminar/Symposium/Conference/Workshops

Bridging Science, Industry and Hobbyists through Ornamental Fish Fair and Aquarium Science Workshop

Ornamental Fish Fair and Aquarium Science Workshop was conducted during 31 January to 1 February 2026, marking a landmark event in the history of ornamental fisheries in Maharashtra and at ICAR-CIFE. Organized jointly with the Maharashtra Aquaculture Farmers Association (MAFA) and supported by industry partners, the event aimed to promote scientific aquarium management, strengthen ornamental fish farming, and foster collaboration among researchers, farmers, industry stakeholders, and hobbyists. The programme was inaugurated by Dr. J. K. Jena, Deputy Director General (Fisheries and Education), ICAR, in the presence of senior officials from the Government of Maharashtra, NFDB, and MAFA. The Aquarium Science Workshop comprised five thematic modules covering aquarium management, fish health, nutrition, breeding, and aquascaping, attracting around 100 participants per session. The Ornamental Fish Fair witnessed an unprecedented footfall of over 10,000 visitors, the highest ever recorded at ICAR-CIFE. Eleven leading companies showcased products and technologies through 25 exhibition stalls. Other highlights included Aqua Fest, a drawing and painting competition for students, and a “Best Aquarium Fish” competition with 220 participants. The event successfully enhanced public awareness, promoted entrepreneurship, and established a new benchmark for collaborative development of the ornamental fisheries sector.



Enabling Entrepreneurship Ecosystem in Fisheries (E3F): Stakeholders' Meet and Policy Roundtable Conference

Under the Industry-Academia Collaboration Programme of ICAR-CIFE, the FEEs Division organized the “*Enabling Entrepreneurship Ecosystem in Fisheries (E3F): Stakeholders' Meet and Policy Roundtable Conference*” on 11 March 2026 at ICAR-CIFE, Mumbai. The event aimed to bring together entrepreneurs, industry leaders, researchers, policymakers, start-ups, and students on a common platform to foster innovation, strengthen institutional linkages, and promote entrepreneurship-led growth in the fisheries and aquaculture sector. Addressing the gathering, Dr. Debajit Sarma, Director In-charge, highlighted the pivotal role of entrepreneurship in creating sustainable livelihoods and driving sectoral transformation. Chief Guest Dr. Sujeet Kumar Shukla, Director, ICAR-CIRCOT, encouraged youth to become innovators and job creators, emphasizing self-reliance and technology-driven enterprise development. A major attraction of the event was the release of the “Innovation Booklet”, showcasing student-led innovations and entrepreneurial ideas. Exhibits included AI- and ML-based advisory platforms, digital applications for fisheries services, value-added fish products, and waste-to-wealth technologies such as fish manure, fish-scale products, and patented fish-skin leather. Interactive sessions on entrepreneurial experiences, start-up success stories, and policy challenges facilitated meaningful dialogue among stakeholders. The conference successfully strengthened industry-academia partnerships and provided valuable insights for developing a vibrant and sustainable fisheries entrepreneurship ecosystem in India.



Kisan and Machuara Mela

ICAR-CIFE, Mumbai, in collaboration with ICAR-Indian Agricultural Statistics Research Institute (ICAR-IASRI), organized a two-day Kisan and Machuara Mela on 20–21 March 2026 under the project “Kisan Sarathi 2.0: Enhancement, Operation, Maintenance and Support”, supported by ICAR, the Ministry of



Electronics and Information Technology (MeitY), and Digital India Corporation (DIC). The event aimed to strengthen the linkage between research, digital technologies, and field-level applications in the fisheries sector. The programme began with a welcome address by Dr. Arpita Sharma, followed by a presentation from Dr. Sanjeev Kumar, Principal Investigator of Kisan Sarathi 2.0, who highlighted the platform's features and benefits. Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE, emphasized the role of digital innovations in empowering fish farmers and fishers. A total of 500 participants attended the event, including scientists, academicians, students, fish farmers, fishers, fish vendors, and other stakeholders from Maharashtra. The mela provided an effective platform for knowledge sharing, stakeholder interaction, and promotion of digital advisory services, contributing to the sustainable development of the fisheries sector.

Events

Celebrating the Spirit of the Constitution: 77th Republic Day at ICAR-CIFE, Mumbai

77th Republic Day was celebrated with great enthusiasm and patriotic spirit. The National Flag was hoisted by Dr. N. P. Sahu, Director (Acting), ICAR-CIFE, in the presence of scientists, officers, staff, students, trainees, and Heads of various departments and administrative sections. In his address, Dr. Sahu paid tribute to the freedom fighters and architects of the Constitution and highlighted India's progress towards the vision of a “Viksit Bharat” (Developed India). He also highlighted ICAR-CIFE's significant contributions to fisheries education, human resource development, research, technology dissemination, entrepreneurship, and start-up promotion. He encouraged the Institute fraternity to uphold integrity, innovation, and excellence in nation-building. The celebration concluded with patriotic cultural programmes. Similar Republic Day celebrations were also organized at ICAR-CIFE's regional centres at Kolkata, Motipur, Rohtak, Kakinada, and Powarkheda.



He encouraged the Institute fraternity to uphold integrity, innovation, and excellence in nation-building. The celebration concluded with patriotic cultural programmes. Similar Republic Day celebrations were also organized at ICAR-CIFE's regional centres at Kolkata, Motipur, Rohtak, Kakinada, and Powarkheda.

Maharashtra's First Multispecialty Fish Clinic and Mobile Fish Care Unit Begins Its Journey

The Foundation Stone Laying Ceremony of “Healing Fins” – Maharashtra's First Multispecialty Fish Clinic and Mobile Fish Care Unit was held on 22 March 2026 at ICAR-CIFE, Mumbai. The foundation stone was laid by Advocate Ashish Shelar, Hon'ble Minister of Information Technology & Cultural Affairs and Guardian Minister, Mumbai Suburban, Government of



Maharashtra, in the presence of distinguished dignitaries, including Shri Haroon Rashid Khan, MLA, Versova Constituency, Shri Saurabh Katiyar, IAS, District Collector, Mumbai Suburban, and Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE. Developed by the Aquatic Environment and Health Management Division with support from the District Planning Committee, Mumbai Suburban, the facility aims to provide comprehensive fish health services, including disease diagnosis, treatment, and advisory support. Designed for fish and shrimp farmers, aquarium owners, and ornamental fish hobbyists, the initiative follows a four-tier approach comprising clinical services, mobile outreach, advanced diagnostics, and telehealth support. The programme witnessed participation from over 250 stakeholders, reflecting its importance in strengthening aquatic animal health management and fisheries development in Maharashtra.

Women at the Heart of Fisheries: Celebrating International Women’s Day and IYWF 2026

ICAR-CIFE, Mumbai celebrated International Women’s Day and the International Year of the Woman Farmer (IYWF) 2026 on 8 March 2026 at Worli and Versova Fishing Villages, Mumbai, under the leadership of Dr. N. P. Sahu, Director (Acting), ICAR-CIFE. The programme aimed to recognize the invaluable contribution of fisherwomen to the fisheries value chain and raise awareness about their role in national development. A total of 97 fisherwomen, 42 students, and 10 scientists participated in the celebrations. Progressive fisherwomen were felicitated, and interactive farmer-scientist sessions provided a platform to discuss livelihood challenges and opportunities. Experts highlighted the importance of value-added fish products, entrepreneurship, income diversification, and women-led enterprises for enhancing livelihoods. The programme emphasized women’s empowerment, recognition of their contributions to fisheries, and the promotion of sustainable income-generating activities through scientific and entrepreneurial interventions.



New Initiatives

BIMReN-BOBP Twinning Research Grant

Dr. Ananthan P.S, Principal Scientist underwent 2-month Faculty Exchange program (9.2.26 to 19.4.26) at Faculty of Science, University of Jaffna, Sri Lanka, International Collaborative project on Sustainable Palk Bay Fisheries.

Under research project “*Sustaining Fisheries Ecosystem in the Palk Bay Region: Assessing Management Options, Livelihoods and Fishers’ Perspectives*”, funded by BoBP-BIMReN Twinning Research Grant;

research scholars and faculty of FEES division were participated in the Marine Social Science Conference South Asia held at the University of Ruhuna, Matara, Sri Lanka, 18–21 March 2026.



Specialized training attended

Dr. Arpita Sharma, Principal Scientist & Head FEEs attended an online International Training Program on “*Climate Risks and Risk-Sensitive Planning for Sustainable & Resilient Agri-food Systems*” in Asia and the Pacific, 24-26 February 2026 organised by Centre on Integrated Rural Development for Asia and the Pacific (CIRDAP), Dhaka

CIFE Annual Sports Meet – 2026

The CIFE Annual Sports Meet–2026 of ICAR-CIFE, Mumbai, was organized by the Post Graduate School Students' Union (PGSSU), during 27th to 30th March 2026. The inaugural ceremony featured a grand march past, welcome address, sports torch relay, oath-taking ceremony, and the formal declaration of the Sports Meet by the Director. The four-day event brought together students, scholars, faculty, and staff in a vibrant celebration of sportsmanship, teamwork, and healthy competition. Participants enthusiastically competed in a wide range of indoor and outdoor events, including cricket, football, basketball, volleyball, badminton, table tennis, chess, athletics, kho-kho, throwball, and tug of war. The competitions showcased exceptional talent, determination, and team spirit throughout the institute community. The event concluded with a prize distribution ceremony recognizing outstanding performances. Shark Strikers (Yellow House) emerged as the Overall Champion of Annual Sports Meet–2026, marking a memorable conclusion to a successful and inspiring sporting extravaganza.



Best publications of the quarter (January-March 2026)

Gunasekaran H, Najwa KV, Nidarshan NC, Porkodi M, Singh LS, Rasal KD, Brahmane MP, Goswami M, Sonwane AA. 2026. Characterization of *Trachinotus blochii* mstnb gene and construction of cognate gRNA vector. International Journal of Biological Macromolecules. 1;364:152225.8.5 (ISI Impact Factor: 8.5; NAAS: 14.50)



Awards/Recognition

Recognition of Excellence: ICAR-CIFE Scientist Elected Fellow of BASA, Bihar



Dr. Ashoshosh D. Deo



Dr. A.K. Verma



Dr. Prem Kumar

In a notable recognition of scientific excellence, three Principal Scientists of ICAR-CIFE, Dr. Ashutosh D. Deo, Dr. Ajit Kumar Verma, and Dr. Prem Kumar were honoured with the prestigious *Fellowship of the Bihar Agricultural Science Academy* (BASA) on 24 March 2026 at Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Bihar, for their distinguished contributions to fisheries science, research, and academic development.

Dr. Arpita Sharma, Principal Scientist & Head FEEs received “*Women Achiever’s Award*”, Environmentalists Programme trust, Mumbai on 6th March 2026. Further, she acted as Expert of the Screening-cum-Evaluation Committee for the promotion of college teachers under Career Advancement Scheme, SNDT Women’s University, Mumbai on 10, February, 2026

INVITED TALKS

Dr. Saurav Kumar, Senior Scientist delivered a lecture on “Biomarkers for Aquatic Environment Management” in ICAR sponsored Short Course on “Advanced Analytical Techniques for Emerging Pollutants in Aquatic Environment” from 9-18th March, 2026 organised by BASU-COF, Kishanganj, Bihar.

Dr. Muralidhar P. Ande, Senior Scientist delivered a lecture on “Biofloc technology and Integrated Multi trophic aquaculture systems” on 17 March 2026 at the training programme on “Improved Aquaculture practices in fish culture” sponsored by NFDB organised by KVK, Undi.

Dr. Neha W. Qureshi, Senior Scientist delivered lecture in winter school on “Smart Feed for Smart Aquaculture”, ICAR-CIFE from 7-27th January 2025 on Intellectual Property Rights in Agriculture Sector with a Special Reference to Fisheries Science

ADMINISTRATION

New Joining

S.No.	Name & Designation	Date of Joining
1.	Sh. Satyendra Kumar, Senior Administrative Officer	01 st January 2026
2.	Sh. Adhane Saurabh Gangadhar, Assistant	30 th January 2026
3.	Sh. Archit Mishra, Assistant	09 th February 2026
4.	Sh. Ashish Choubey, Senior Administrative Officer	20 th February 2026

Promotion

S.No.	Name & Designation	Promoted Post	Date of Promotion
1.	Shri Sambhaji S. Shelke, Jun. Clerk	Senior Clerk	01 st January 2026
2.	Shri Mahesh Waghela, Assistant	Asst. Administrative Officer	01 st January 2026
3.	Shri Kishore Bose, Senior Clerk,	Assistant	01 st January 2026
4.	Shri Ninad Kandalgaonkar, Jun. Clerk	Senior Clerk	01 st January 2026

Transfer/Deputation

S.No	Name of the Officer, Present Pos	Transfer From	Transfer To	w.e.f.
1	Shri Surendra, Assistant	ICAR-CIFE, Mumbai	ICAR-CIFE, Rohtak Centre	08 th January 2026
2.	Shri Vijaypal Bijaraniya, Administrative Officer	ICAR-CIFE, Mumbai	ICAR-IARI, New Delhi	19 th January 2026

Superannuation

S.No	Name & Designation	Date
1	Dr. Shrinivas Jahageerdar, Principal Scientist, ICAR-CIFE, Mumbai	28.02.2026
2.	Shri Pratap Kumar Das, Chief Technical Officer, ICAR-CIFE, Mumbai	28.02.2026
3.	Shri Satendra Prajapat, Sr. Technician, ICAR-CIFE, Powarkheda Centre	31.01.2026

QUIZ

Which fish is famous for its ability to change color and blend into its surroundings?
(Send you answer to mdarpan@cife.edu.in; The name of the person who sends the correct answer first will be featured in the next issue of *Matsya Darpan*)

Published by

Dr. N.P. Sahu
Director, ICAR-CIFE,
Off Yari Road, Versova,
Andheri (W), Mumbai-400061

Editorial team

Dr. Saurav Kumar, Senior Scientist
Dr. Dayal Devadas, Scientist
Shri Jagadeesan A.K., Joint Director (OL)
Smt. Rekha Nair, ACTO

Contact Us

Director, ICAR- Central Institute of Fisheries Education,
Panch Marg, Off Yari Road, Versova, Andheri (West), Mumbai- 400 061
Contact: +91-22-26361446/7/8 Email: director@cife.edu.in
Fax: +91-22-26361573, Website: www.cife.edu.in